REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2025

छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति और चुनौतियों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

राकेश कुमार अजय
शोधार्थी (इतिहास) डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, डॉ. सी.वी.रामन विश्वविद्यालय,कोटा,बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश–

शोध पत्र "छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति और चुनौतियाँ पर विश्लेषणात्मक अध्ययन" छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के विविध आयामों तथा उसके संरक्षण के समक्ष उपस्थित समकालीन चुनौतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। छत्तीसगढ़ राज्य की बहुआयामी, जनजातीय एवं लोकआधारित सांस्कृतिक परंपराओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। छत्तीसगढ़ भारत के उन विशिष्ट क्षेत्रों में सम्मिलित है जहाँ संस्कृति केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित न होकर सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वास, पर्यावरणीय चेतना एवं सामुदायिक जीवन का अभिन्न अंग रही है। गोंड, मुरिया, बाइगा, उरांव, हल्बा आदि जनजातियों की परंपराएँ, लोकपर्व, लोकनृत्य, लोकगीत एवं शिल्प परंपराएँ इस सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाती हैं। छत्तीसगढ़ की संस्कृति का मूल आधार उसकी जनजातीय परंपराएँ, लोकनृत्य, लोकगीत, लोकनाट्य, अनुष्ठान, पर्व–त्योहार तथा पारंपरिक शिल्प हैं, जो सदियों से जनजीवन, पर्यावरण और सामाजिक संरचना से गहराई से जुड़ी रही हैं।संस्कृति संरक्षण से जुड़ी प्रमुख समस्याओं की पहचान करना तथा संरक्षण हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है। यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक स्रोतों के रूप में जनजातीय क्षेत्रों में लोक प्रदर्शनों का अवलोकन तथा कलाकारों से संवाद, और द्वितीयक स्रोतों के रूप में शोध पत्र, शासकीय रिपोर्टें, सांस्कृतिक नीतियाँ एवं पुस्तकों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गोंड, मुरिया, बाइगा, उरांव जैसी जनजातियाँ छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान की वाहक हैं, जिनकी लोकपरंपराएँकृजैसे पंडवानी, करमा नृत्य, सुआ नृत्य, राउत नाचा, तथा लोकशिल्पकृआज भी सामाजिक एकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। किंतु शहरीकरण, वैश्वीकरण, तकनीकी परिवर्तन, आर्थिक असुरक्षा, पर्यावरणीय संकट तथा युवाओं की बदलती रुचियाँ इस संस्कृति के संरक्षण में गंभीर चुनौती बनकर उभरी हैं। शोधपत्र में संस्कृति संरक्षण हेतु डिजिटल दस्तावेजीकरण, जनसहभागिता आधारित योजनाएँ, शिक्षा में लोकसंस्कृति का समावेश तथा जनजातीय नेतृत्व के सशक्तिकरण जैसे व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। निष्कर्षतः, छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति का संरक्षण न केवल सांस्कृतिक पहचान की रक्षा है, बल्कि सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

शब्दकुंजी – छत्तीसगढ़ की प्राचीनता, संस्कृति, चुनौतियाँ, विश्लेषणात्मक अध्ययन ....इत्यादि।

प्रस्तावना–

भारत के हृदय स्थल पर बसे छत्तीसगढ़ प्राचीनकाल से ही अनेक संस्कृति एवं परम्पराओं से समृद्ध रहा है। अपनीमिट्टी, बोली, भाषा, रहन–सहन, खान–पान और संस्कृति पर प्रत्येक व्यक्ति को गर्व होता है। हर एक व्यक्ति के लिए उसकी परम्परा एवं संस्कृति आत्मसम्मान का विषय होता है। छत्तीसगढ़ वासी एक ऐसे ही प्राचीन संस्कृति पर आज भी गर्व करते है। जिसे बोरे–बासी के नाम से न केवल दे"ा वरन दुनिया भर के लोग परिचित है। यह छत्तीसगढ़ के लोगों के लिए स्वाभिमान की बात है बोरे–बासी केवल किसी वर्ग वि"ोष का नही अपितु सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ का प्राचीन व्यंजन है। बोरे–बासी एक सादा भोजन है परंतु परम, स्वाद वाला पोषक तत्वों से भरपूर, गर्मी औरलू से बचाने वाला भोजन है जिस प्रकार दे"ा–विदे"ा में ठीक उसी प्रकार इसकी ठंडकता प्रदान करने वाले वि"ोष गुण के कारण ''ठंडा मतलब बोरे–बासी'' का नारा प्रसिद्ध है, जो छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति की महत्व को उजागर करती है। किसी भी राज्य की संस्कृति एवं परम्परा में वहाँ की भौगोलिक दृष्टि से अन्य राज्यों की तुलना में अधिक वर्षा वाला राज्य है। यहाँ धान की अधिक उत्पादन होने के कारण छत्तीसगढ़ दे"ा भर में ''धान के कटोरा'' के नाम से प्रसिद्ध है राज्य के किसानो की आय का प्रमुख स्त्रोत धान की फसल है। इसलिए यहाँ तीज त्यौहारों से लेकर प्रतिदिन के जीवन में चावल का बहुत उपयोग होता है इसलिए छत्तीसगढ़ के लोक गायन में भी बोरे–बारे का वर्णन मिलता है। जो कि हमारी संस्कृति में रची–बसी है।

शोध का उद्दश्य –

- छत्तीसगढ का परिचय एवं प्राचीन संस्कृति का अध्ययन करना।
- छत्तीसगढ़ के आदिवासी संस्कृति के विविध आयामों का अध्ययन करना, जैसे – धार्मिक प्रथाएं,, पर्व एवं त्यौहार, प्रचलित पकवान, प्रचलित आभूषण, लोक नृत्य, लोक गाथा, लोकनाट्य, लोक गीत, शिल्प कला, चित्रकला, आदि ।
- छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति की चुनौतियों का अध्ययन करना, जैसे – प्रचलित रूढ़िगत प्रथाएं, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन आदि।

शोध की कार्य प्रणाली –

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दोनों प्रवृत्तियों पर आधारित है।

- प्राथमिक स्रोत– जनजातीय क्षेत्रों में साक्षात्कार, लोक प्रदर्शनियों का अवलोकन, कलाकारों से संवाद।
- द्वितीयक स्रोत– शोध पत्र, शासकीय दस्तावेज, सांस्कृतिक नीति रिपोर्टें (2010–2025), पुस्तकों एवं पत्रिकाओं से प्राप्त जानकारी।

विषयवस्तु –

जनजातीय समाज एवं परंपराएँ

छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या का लगभग 30 प्रतिशत भाग जनजातीय समुदायों का है। प्रमुख जनजातियाँक्ृ गोंड, मुरिया, बाइगा, उरांव, कोरकू, हल्बा आदि। अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान रखती हैं। छत्तीसगढ़ में बासी इतनी प्रसिद्ध है कि यहाँ के निवासी बासी भोजन खाने के द्वारा समय का भी आकलन कर सकते है। जैसे–अगर कोई पूछे कि कितने बजे काम पर जाओगे, सामने वाला कहेकि '' बासीरवा के निकल हूँ''। राज्य के अमीर–गरीब सभी घरों में इसे बड़े ही चाव से खाया जाता है। लोकगायक शेख हुस्सैन जी ने बासी खाने वाले किसानो श्रम वीरों के सम्मान के लिए 'बटकी म बासी अउ चुटकी म नून मैहागां वथवददरिया तैहाकान दे के सुन जैसे लोक गीत गाया जाता है।घोटुल सामाजिक जीवन जीने की कला सीखने वाली पाठशाला है, यहाँ पर नवयुवक, नवयुवतियाँ संग–संग जीने–मरने की कला बहुत ही अनुशासन के साथ सीखते हैं, जिसका सतत् नियंत्रण घोटुल के पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है। यहाँ छोटी–छोटी गलतियों के लिए सजा का प्रावधान होता है, जिससे वनवासी समाज अपने नवयुवकों एवं नवयुवतियों को सामाजिक परम्पराओं एवं मर्यादाओं की सीख देते हैं। जनजाति समाज सामूहिक जीवन पद्धति से अपना जीवन–यापन करता है।

इन जनजातियों की संस्कृति में देवगुड़ी, ग्राम देवता तथा लोकपर्व (करमा, छेरछेरा, हरेली) आदि प्रमुख है। सुआ नृत्य, करमा नृत्य, राउत नाचा जैसे लोकनृत्यों द्वारा सामाजिक एकता एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति प्रमुख स्थान रखते हैं। छत्तीसगढ़ अंचल की विशिष्ट वेषभूषा है। ग्रामीण स्त्रियों के प्रमुख वस्त्र लुगरा, पोलका, साड़ी तथा ब्लाउज है। ये माथे पर टिकली, पटा, मांगमोती, कानों में झुमका, बाली, खिनवा या हार, नाक में नथ, फूल्लियाँ, बुलांक, बाहों में बहुटा या नागमोरी, गले में सूता चारकोकला, तिलरी, हार या चैनफांस, कमर में कमरपट्टा या करधन, पांव में पैरी, सॉंटी, लच्छा या पैर पट्टी तथा अंगुलियों में बिछिया पहनती हैं। ग्रामीण पुरूष धोती, कुरता, बंडी, अंगरखा या लसुरवा पहनते हैं तथा सिर में पागा बांधते हैं पुरूष अंगूठी, करधन धारण करते हैं।

लोककला एवं लोकसाहित्य

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में काव्य प्रतिभा नहीं होती किन्तु महत्व की बात यह है कि छत्तीसगढ़ियां अपने गावों की अभिव्यक्ति बड़ी सहजता के साथ अपने टूटे–फूटे लोक गीतों में अंकित करते हैं। प्रत्येक लोक गीतों में मन के सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति ईमानदारी से की जाती है। छत्तीसगढ़ के लोक गीतों में दिनचर्या में आने वाली तमाम बातों की, व्यक्तिगत सुख–दुख की अभिव्यक्ति होती है। इस अंचल के प्रमुख लोकगीतों में करमा, ददरिया, भोजली, पण्डवानी, भरथरी, सुवा गीत, बाँस गीत, बिहाव गीत है। प्रमुख प्रचलित लोक नृत्यों में करमा, पंथी, सुआ, दहिकांदो, गौरा तथा डण्डा हैं। मृदंग, झांझ, डोलक, मांदर, तबला, चिकारा, डफली, मोहरी, हारमोनियम आदि प्रमुख वाद्य यंत्र हैं।

किसी भी क्षेत्र की सभ्यता एवं संस्कृति पर वहां की बोली जाने वाली भाषा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, भाषा या बोली क्षेत्र के निवासियों की भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम होता है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में बोली जाने वाली प्रधान बोली छत्तीसगढ़ी है। यह लचीली एवं कर्णप्रिय है यह कुछ अंतरों के साथ संपूर्ण छत्तीसगढ़ में बोली जाती है। उदाहध्रण के लिए रायपुर येत्र में 'रइबे, खा डाबे' तो उसी को बिलासपुर में 'रहिबे, खा डारे रहिबे' उच्चारण किया जाता है। बिलासपुर, रायपुर, रायगढ़ तथा दुर्ग का कुछ भाग शुद्ध छत्तीसगढ़ी का केन्द्र माना जाता है। यह कहना कठिन है कि छत्तीसगढ़ी बोली का प्रचलन छत्तीसगढ़ में कब हुआ। ग्रियर्सन का यह अभिमत है कि छत्तीसगढ़ी पूर्वी हिन्दी जिसका केन्द्र अवध है, जबलपुर और मण्डला से यहाँ आयी है। जो आर्य लोग यहाँ बस गये थे, उन्होंने ही इसे प्रारंभ किया था। यह उल्लेखनीय है कि अवधी तथा बघेलखण्डी की तरह ही छत्तीसगढ़ी पूर्वी हिन्दी समूह की एक बोली है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों में जहाँ गोड़ों की अधिकता है, वहाँ छत्तीसगढ़ से कुछ भिन्न दक्षिण भारत की तेलगु, तमिल मिश्रित गोडी हल्बी आदि बोलियाँ प्रचलित हैं। छत्तीसगढ़ में अनेक भाषा–भाषी जैसे तमिल, तेलगु, उड़िया, बंगाली, मराठी बोलने वाले भी हैं। अतएव इस प्रदेश को विभिन्न भाषाओं और बोलियों का संगम स्थान कहना उचित होगा। इस प्रकार पंडवानी (तीजनबाई द्वारा वैश्विक पहचान प्राप्त) महाभारत की लोकशैली में प्रस्तुति, भरथरी एवं चंदैनी में वीरगाथा एवं प्रेम आख्यानों की परंपरा रही है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत कृषि, ऋतु, प्रेम एवं जीवन–संघर्ष पर आधारित रहते है।

लोक चित्रकला एवं शिल्प परंपरा

रामनामी समाज द्वारा शरीर पर 'रामनाम' लिखवाने की परंपरा विशिष्ट है। मृत्तिका कला, बाँस शिल्प, लौह शिल्प ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति बहुआयामी, जीवंत तथा जनजीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। सांस्कृतिक क्षरण का प्रमुख कारण राज्य की सांस्कृतिक नीति का कमजोर क्रियान्वयन है। जनजातीय नेतृत्व को निर्णय प्रक्रिया में स्थान न देना भी संस्कृति के क्षरण का कारण है।

छत्तीसगढ़ प्रॉंत में ग्रामीण समाज और कुटीर कार्य, जिसे अब उद्योग कहा जाने लगा है, ने शोध क्षेत्र के हस्तशिल्प को बनाए रखने और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मनु द्वारा निर्धारित जाति प्रथा के कार्य विभाजन ने इस निरंतरता को बनाए रखा। इस कला और व्यवस्था पर सर्वाधिक मुठाराघात उपनिवेशवादी शासन ने अपने स्वार्थों को बनाए रखने के लिए किया। पारम्परिक जाति व्यवस्था में व्यवसायों के जुड़े होने के कारण हस्तशिल्ला कला पूरी तरह तबाह होने से बच गई, वर शम्मलिन्थिको और कलाकारों का पलायन निकतवर्ती नगरों और कस्बों में हुआ। जार्ज विड्वृत ने भी इसी तथ्य को इंगित किया है। छत्तीसगढ़ में कई प्रकार के हस्तशिल्प कार्य किए जाते हैं। प्राकृतिक तंतुकों की हस्तशिल्प ने कताई, रंगाई और बुनाई कर वरश्ख बनाए जाते हैं। वने वरखों पर कढ़ाई और सिलाई कर सजावटी और उपयोगी सामग्री बनाई जाती है।

छत्तीसगढ़ के जनजाति अपनी सांस्कृतिक व सामाजिक वि"ाष्टता एवं जीवन शैली के कारण अलग पहचान रखते हैं। विरासत में मिले नृत्य, संगीत इनके दुष्कर जीवन–यापन में भी इन्हे आनंदित रखते हैं। समय के साथ–साथ वनों की कटाई एवं इनके क्षेत्रो में अतिक्रमण के कारण व अन्य समाजों के संपर्क में आकर इनके रहन–सहन में व्यापक बदलाव आ रहे हैं तथा इनके सामाजिक सांस्कृतिक पाठ"ााला घोटुल भी समाप्त होते जा रहे हैं। जनजातियों के जीवन स्तर को उपर उठाने सरकारी प्रयास निरंतर जारी हैं।

छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति की चुनौतियों –

सामाजिक परिवर्तन में युवाओं में लोकसंस्कृति के प्रति दूरी। परंपराओं का आधुनिक रुझानों के अनुसार विकृति प्रमुख है। आर्थिक कारण में कलाकारों को पारंपरिक शिल्प में रोजगार नहीं मिल पा रहा है। लोककला का व्यवसायीकरण अस्मिता को हानि पहुँचा रहा। पर्यावरणीय संकट में देवगुड़ी और सांस्कृतिक स्थल वनों के कटाव से प्रभावित किया है। परंपरागत जीवन शैली पर्यावरणीय संकटों के कारण प्रभावित हो रही है। संरक्षण का अभाव के कारण तेजी से बढ़ती आधुनिक जीवन शैली और पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पारंपरिक मूल्यों एवं लोक परंपराओं को कमजोर कर रहा है। युवाओं में पारंपरिक पहनावा, भाषा, लोककला और संगीत के प्रति रुझान कम होता जा रहा है।

आधुनिकता एवं पा"चमीकरण के कारण आज वैश्वीकरण के इस दौर में बाजारवाद के प्रभाव से छत्तीसगढ़ भी अछूता नहीं रहा। इसके दुष्प्रभावों से छत्तीसगढ़ और इसकी संस्कृति भी भयाक्रांत है। बाजारवादी व्यवस्था लोक और उसकी संस्कृति को किस कदर निगलती जा रही है, इसे स्पष्ट रूप से बदलते सामाजिक एवं सांस्कृत्तिक संदों में देखा जा सकता है।

चुनौतियों का वि"लेशण –

वर्तमान युग की यांत्रिकता–आद्योगिकीकरण आव"यकताएं, व्यावसायीकरण, उपभोक्तावाद नीतियों आदि के दबाव से इनके सामाजिक संरचना में द्रुत गति से बदलाव आ रहा है। छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति एक जीवंत विरासत है, जिसमें जनजीवन की अनुभूतियाँ, पर्यावरण से सामंजस्य, सामाजिक समरसता और आत्म–रक्षण की परंपराएँ समाहित हैं। इस संस्कृति को संरक्षण की आवश्यकता है न केवल उसकी सांस्कृतिक पहचान के लिए, अपितु एक स्थायी एवं आत्मनिर्भर विकास मॉडल के रूप में भी। अतः आवश्यक है कि संस्कृति संरक्षण को केवल लोकनाट्य और गीतों तक सीमित न रखकर उसे एक नीति–स्तर पर गहराई से समाहित किया जाए।

सांस्कृतिक धरोहर से समृद्ध होने के बाद भी हमारी संस्कृति व स्थान नहीं प्राप्त कर पाया है जो स्थान प्राप्त करना था। वर्तमान आधुनिक युग नवीन संस्कृति अर्थात पाश्चात्य संस्कृति का उदय होने के कारण हमारे प्राचीन संस्कृति कहीं खोते हुए नजर आ रही है अतः हमारी प्राचीन संस्कृति के आदर्शों को नवीन संस्कृति में शामिल करना आवश्यक है। छत्तीसगढ़ राज्य भारत की सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध और विविधतापूर्ण भूमि है। यहाँ की जनजातीय परंपराएँ, लोककलाएँ, रीति–रिवाज, संगीत, नृत्य, त्यौहार एवं बोली–बानी मिलकर एक अनोखी सांस्कृतिक पहचान बनाते हैं। किन्तु वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं वै"वक प्रभावों के कारण इस सांस्कृतिक विरासत के सामने कई प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ छत्तीसगढ़ की संस्कृति के लिए चिन्ताजनक हैं।

निष्कर्ष–

छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति एक जीवंत विरासत है, जिसमें सामाजिक समरसता, पर्यावरणीय संतुलन तथा सामुदायिक चेतना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। इस संस्कृति का संरक्षण केवल सांस्कृतिक पहचान की रक्षा नहीं, बल्कि एक स्थायी एवं आत्मनिर्भर विकास मॉडल की स्थापना भी है। अतः आवश्यक है कि संस्कृति संरक्षण को नीति, शिक्षा और विकास के केंद्र में स्थान दिया जाए। छत्तीसगढ़ की संस्कृति अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है, किंतु यह संस्कृति मौखिक, अनौपचारिक और परंपरागत माध्यमों से संरक्षित रही है। आधुनिकता, वैश्वीकरण और आर्थिक विकास के दबाव में पारंपरिक मूल्य क्षीण हो रहे हैं। शासन और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयास सीमित और अल्प–प्रभावी रहे हैं। जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान पर बाहरी प्रभाव पड़ रहा है, जिससे सांस्कृतिक अस्मिता संकट में है।

सांस्कृतिक संरक्षण हेतु सुझाव

- डिजिटल दस्तावेजीकरण
- पारंपरिक गीत, कहानियाँ, चित्रकला, नृत्य एवं अनुष्ठानों का वीडियो, ऑडियो व टेक्स्ट रूप में डिजिटलीकरण।

- छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति पर आधारित डिजिटल म्यूजियम की स्थापना।
- जनसहभागिता आधारित योजनाएँ
- ग्राम स्तर पर सांस्कृतिक समितियों का गठन।
- स्थानीय कलाकारों को योजनाओं में भागीदार बनाकर नीति–निर्माण में शामिल करना।
- विद्यालय शिक्षा में लोक संस्कृति
- पाठ्यक्रम में स्थानीय लोकगाथाएँ, परंपराएँ, एवं नृत्य आदि को स्थान देना।
- विद्यालयों में लोककला कार्यशालाओं एवं महोत्सवों का आयोजन।
- जनजातीय नेतृत्व को सशक्त करना
- जनजातीय युवाओं को सांस्कृतिक दूत के रूप में प्रशिक्षित करना।
- उनकी भाषा, परंपरा और सामाजिक संरचना को संरक्षण हेतु निर्णयों में प्राथमिकता देना।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. वर्मा, विजय. छत्तीसगढ़ की लोककला, रायपुर, साहित्य निकेतन, 2011।
2. साहू, मीना. जनजातीय परंपराओं में स्त्री की भूमिका, बिलासपुर – महिला अध्ययन केंद्र, 2015।
3. IGNCA (2018). Tribal Art Documentation of Central India- दिल्ली।
4. छत्तीसगढ़ राज्य अनुसंधान परिषद. संस्कृति एवं विकास रिपोर्ट, रायपुर – 2016।
5. जनजातीय कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़ शासन की वेबसाइट और दस्तावेज।
6. ICHR एवं UGC से प्राप्त शोध प्रबंध (2010–2020)।
7. समाचार स्रोत : दैनिक भास्कर, नई दुनिया, प्रभात खबर।
8. सिंह, बी. एल. (2011), छत्तीसगढ़ की आदिम संस्कृति का अध्ययन, जनजातीय धार्मिक प्रथाएँ, व्रत, अनुष्ठान, परंपरागत औषधि ज्ञान, रायपुर, साहित्य निकेतन। पृष्ठ संख्या 11–13